अथातः सम्प्रवक्ष्यामि भुक्तिमुक्तिप्रदायकान् ।
राममन्त्रान् स भगवन् प्रतिमन्वन्तरे ह्यभूत् ।।४३४।।
युगानां परिवर्तेन कल्पे रामावतारकः ।
ततो ह्यस्य प्रवक्ष्यामि मन्त्रराजं षडक्षरम् ।।४३५।।
रामाय नम इत्येष रांक्लींह्रींऐंप्रपूर्वकः ।
श्रींताराद्यश्च षड्वर्णो मन्त्रोऽयं षड्विधो मतः ।।४३६।।
ब्रह्मा सम्मोहनः शक्तिर्दक्षिणामूर्तिरिव च ।
अगस्त्यः श्रीशिवः प्रोक्ता मुनयोऽनुक्रमादिमे ।।४३७।।
छन्दो गायत्रसंज्ञं च श्रीरामो देवता मतः ।
पञ्चाशन्मातृकामन्त्रवर्णप्रत्येकपूर्वकः ।।४३८।।
लक्ष्मादिर्वाग्भवादिश्च मन्मथादिर्ध्रुवादिकः ।
रामचन्द्रमनोर्भेदाः शतद्वयमिता अमी ।।४३९।।

श्रीराम-मन्त्रविधि—अब मैं प्रत्येक मन्वन्तरों में हुये उन भगवान् राम के भोग एवं मोक्ष प्रदान करने वाले मन्त्रों को कहता हूँ। युगों के परिवर्त्तन से कल्प में राम का अवतार होता है; इसलिये इसके षडक्षर मन्त्रराज को कहता हूँ। 'रामाय नमः' यह मन्त्र आरम्भ में 'रां क्लीं ह्रीं ऐं श्रीं ॐ' इन छः वीजों में से किसी एक बीज के संयुक्त करने से छः अक्षर का हो जाता है। इस प्रकार अलग-अलग छहों बीजों के संयुक्त करने से छः प्रकार के षडक्षर मन्त्र बनते हैं, जो इस प्रकार होते हैं—रां रामाय नमः, क्लीं रामाय नमः, ह्रीं रामाय नमः, ऐं रामाय नमः, श्रीं रामाय नमः, ॐ रामाय नमः। इन मन्त्रों के ऋषि क्रमशः ब्रह्मा, सम्मोहन, शक्ति, दक्षिणामूर्ति, अगस्त्य एवं शिव कहे गये हैं। इनके छन्द गायत्री एवं देवता श्रीराम कहे गये हैं। पचास मातृकाओं में से प्रत्येक को रामाय नमः के पहले लगाने से एवं उन सबके पूर्व पृथक्-पृथक् 'श्री ऐं क्लीं ॐ' बीजों को लगाने से दो सौ प्रकार के राममन्त्र बनते हैं।।४३४-४३९।।

रामभद्रेतिशब्देन चैवं भेदाः शतद्वयम् ।
रमाबीजादिकानां तु विश्वामित्रो मुनिर्मतः ।।४४०।।
वाग्बीजपूर्वकाणां तु दक्षिणामूर्तिरुच्यते ।
कामबीजादिपूर्वाणां मुनिः सम्मोहनो मतः ।।४४१।।

तारादिपूर्वकाणां तु श्रीशिवः प्रोच्यते मुनिः।
श्रीमायामन्मथैकैकबीजाद्यन्तर्गतो यदा।
रामभद्रो रामचन्द्रः षोढा षड्वर्ण उच्यते ॥४४२॥
षोढा नमोऽन्तः प्राक्प्रोक्तः फट्कारान्तः स एव हि।
षोढा स्याद्वह्निजायान्तः स एवं षड्विधो मतः ॥४४३॥
चतुर्विंशतिसङ्ख्याका भेदास्तेन निरूपिताः ॥४४४॥

रामभद्र शब्द से भी दो सौ प्रकार के राममन्त्र बनते हैं। आरम्भ में रमाबीज (श्री) लगे मन्त्रों के ऋषि विश्वामित्र, वाग्बीज (ऐं) युक्त मन्त्रों के ऋषि दक्षिणामूर्ति, कामबीज (क्लीं) से युक्त मन्त्रों के ऋषि सम्मोहन एवं तार (ॐ) से युक्त मन्त्रों के ऋषि श्रीशिव कहे गये हैं। रामभद्र एवं रामचन्द्र के आदि एवं अन्त में श्रीं ह्रीं क्लीं में से एक-एक बीजों को लगाने से छः षडक्षर मन्त्र बनते हैं। छः मन्त्र अन्त में नमः लगाने से बनते हैं, जो पूर्व में कहे गये है। छः मन्त्र अन्त में फट् लगाने से बनते हैं (श्रीं रामाय फट्, ह्रीं रामाय फट्, क्लीं रामाय फट् इत्यादि)। इसी प्रकार छः मन्त्र अन्त में स्वाहा लगाने से भी बनते हैं (श्रीं रामाय स्वाहा, ह्रीं रामाय स्वाहा इत्यादि)। इस प्रकार कुल चौबीस प्रकार के मन्त्रभेद कहे गये हैं।।४४०-४४४।।

ब्रह्मरन्ध्रे भ्रुवोर्मध्ये हृन्नाभ्योर्गुह्यपादयोः।
बीजैः षड्दीर्घसंयुक्तैः षडङ्गविधिरीरितः ॥४४५॥
वीरासनसमारूढं व्याख्यामुद्रोपशोभितम्।
वामोरुन्यस्ततद्धस्तं सीतालक्ष्मणसंयुतम् ॥४४६॥
वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रं दशांशं मधुरप्लुतैः।
बिल्वपत्रैः फलैः पुष्पैस्तिलैर्वा पङ्कजैर्हुनेत् ॥४४७॥

ब्रह्मरन्ध्र, भ्रूमध्य, हृदय, नाभि, गुह्य एवं दोनों पैरों में बीजमन्त्र के छः दीर्घ स्वरूपों से षडङ्ग-न्यास करना कहा गया है। वीरासन पर विराजमान, व्याख्या मुद्रा से सुशोभित हाथ को बाँयीं जाँघ पर रखे हुये एवं सीता तथा लक्ष्मण से समन्वित श्रीराम का ध्यान करते हुये मन्त्र का वर्णलक्ष अर्थात् छः लाख जप करना चाहिये। तत्पश्चात् मध्वक्त बिल्वपत्र, बिल्वफल, बिल्वपुष्प, तिल अथवा कमलों से कृत जप का दशांश साठ हजार हवन करना चाहिये।।४४५-४४७।।

पूजयेद्वैष्णवे पीठे मूर्तिं मूलेन कल्पयेत्।
श्रीं सीतायै द्विठान्तेन वामपार्श्वगतां यजेत् ॥४४८॥
ततस्त्रिकोणकोशाग्रे पृष्ठतो लक्ष्मणं यजेत् ॥४४९॥

वामपार्श्वत्रिकोणस्थं शार्ङ्गं दक्षिणतः शरान्।
ततः षड्दलमध्ये तु षडङ्गानि प्रपूजयेत् ॥४५०॥
तद्बाह्येऽष्टदलं प्रोक्तं पूजयेदिष्टदिक्षु च ॥४५१॥
आत्मानं च निवृत्तिं च ह्यन्तरात्मानमेव च।
प्रतिष्ठां परमात्मानं ततो विद्यां प्रपूजयेत् ॥४५२॥
नानात्मानं तथा शान्तिं केशरेषु प्रपूजयेत् ॥४५३॥
दलमध्ये वासुदेवं श्रियं सङ्कर्षणं तथा।
शान्तिं प्रद्युम्नमग्रेऽनिरुद्धं च रतिमर्चयेत् ॥४५४॥
हनूमन्तं च सुग्रीवं भरतं च बिभीषणम् ॥४५५॥
निषादाङ्गदशत्रुघ्नाञ्जाम्बवन्तं दलाग्रतः।
आञ्जनेयं तदग्रे च वाचयन्तं कृताञ्जलिम् ॥४५६॥
धृतिं जयन्तं विजयं सुराष्ट्रं राष्ट्रवर्द्धनम्।
अकोपं धर्मपालाख्यं मन्त्रिणश्च क्रमाद्यजेत् ॥४५७॥

मूल मन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके वैष्णवपीठ पर श्रीराम का पूजन करना चाहिये। श्रीं सीतायै स्वाहा मन्त्र से राम के वाम पार्श्व में सीता का पूजन करना चाहिये। इसके बाद त्रिकोण में सीताराम के पीछे लक्ष्मण का पूजन करने के उपरान्त राम के वाम पार्श्व में शार्ङ्ग का और दक्षिण पार्श्व में बाणों का पूजन करना चाहिये। तदनन्तर षट्कोण में षडङ्ग-पूजन करना चाहिये। फिर उसके बाहर अष्टदल की आठो दिशाओं में आत्मा, निवृत्ति, अन्तरात्मा, प्रतिष्ठा, परमात्मा, विद्या, नानात्मा और शान्ति का पूजन करना चाहिये। यह पूजन अष्टदलों के केशरों में किया जाता है। फिर दलों के मध्य में वासुदेव, श्री, संकर्षण, शान्ति, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, रति एवं सरस्वती का पूजन करना चाहिये। फिर उनके आगे हनुमान, सुग्रीव, भरत, विभीषण, निषाद, अंगद, शत्रुघ्न और जामवन्त का दलों के अग्रभाग में पूजन करना चाहिये। भगवान् राम के आगे बद्धाञ्जलि होकर स्तुतिरत हनुमान का अर्चन करना चाहिये। पुन: अष्टदल में ही क्रमश: धृति, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, राष्ट्रवर्द्धन, अकोप, धर्मपाल एवं मन्त्रियों का पूजन करना चाहिये।

वसिष्ठं वामदेवं च जाबालिं गौतमं तथा।
भरद्वाजं काश्यपं च वाल्मीकिं कौशिकं तथा ॥४५८॥
नारदं सनकं चैव सनातनमतः परम्।
सनत्कुमारं च यजेत्तद्बाह्ये द्वादशारके ॥४५९॥
नीलं नलं सुषेणं च मैन्दं च शरभं ततः।
द्विविदं च गवाक्षं च सकिरीटं सकुण्डलम् ॥४६०॥

श्रीवत्सं कौस्तुभं शङ्खं गदाचक्रे च पद्मकम् ।
अर्चयेत्षोडशदले पूर्वतस्तु कृताञ्जलीन् ॥४६१॥

पुनः उसके बाहर द्वादशदल कमल में वसिष्ठ, वामदेव, जाबालि, गौतम, भरद्वाज, काश्यप, वाल्मीकि, कौशिक, नारद, सनक, सनातन एवं सनत्कुमार का पूजन करना चाहिये। तदनन्तर षोडशदल कमल में पूर्व से आरम्भ का अञ्जलिबद्ध नील, नल, सुषेण, मैन्द, शरभ, द्विविद, गवाक्ष, किरीट, कुण्डल, श्रीवत्स, कौस्तुभ, शंख, गदा, चक्र एवं पद्म का पूजन करना चाहिये।

ध्रुवो धरश्च सोमश्च आपश्चैवानिलोऽनलः ।
प्रत्यूषश्च प्रभातश्च वसवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः ॥४६२॥
वीरभद्रश्च शण्डश्च गिरीशश्च महायशाः ।
अजैकपादहिर्बुध्न्यः पिनाकी चापराजितः ॥४६३॥
भुवनाधीश्वरश्चैव कपाली च दिशाम्पतिः ।
स्थाणुर्भगश्च भगवान् रुद्रा एकादश स्मृताः ॥४६४॥

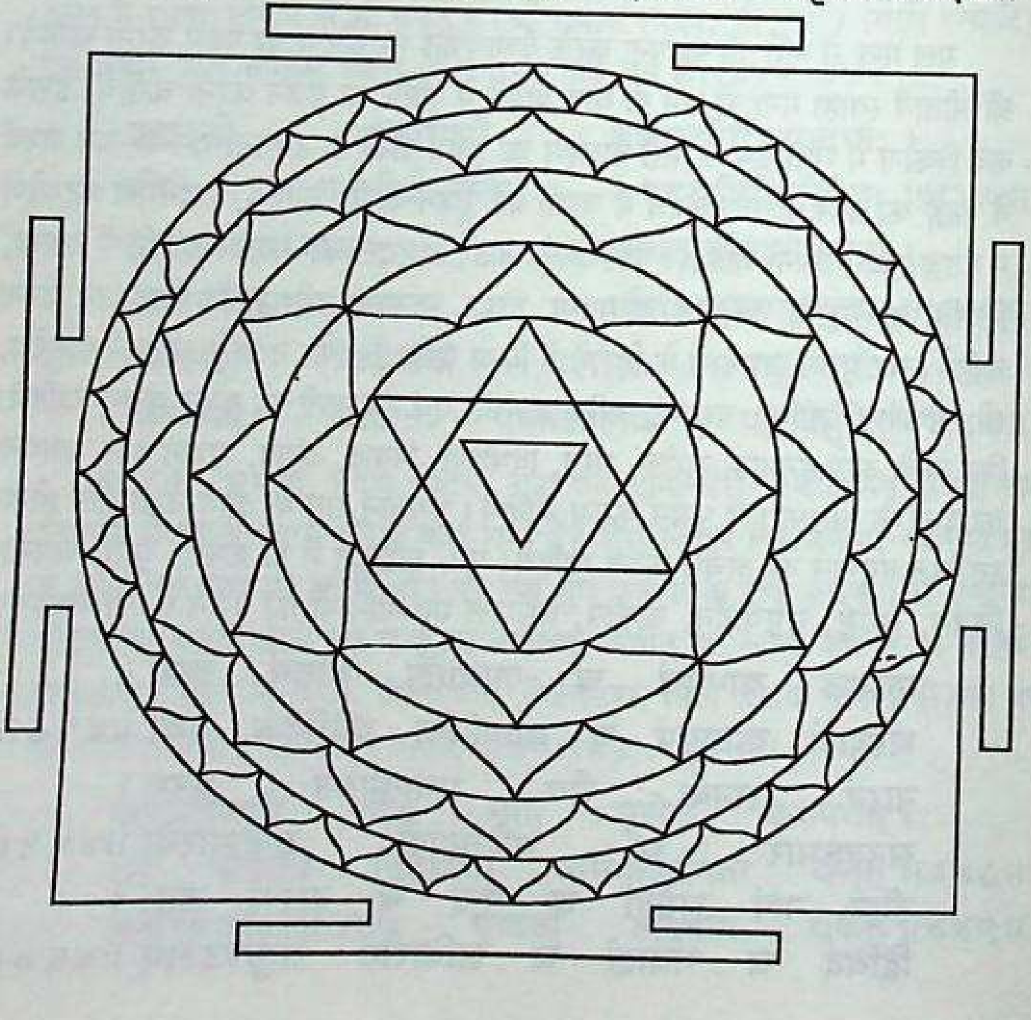

विवस्वान् सूर्यवेदाङ्गौ भानुरिन्द्रो रविस्तथा ।
गभस्तिस्तु यमः सर्वसाक्षी चापि दिवाकरः ॥४६५॥
चित्रो विष्णुरिति प्रोक्ता आदित्या द्वादश क्रमात् ॥४६६॥
धातारमन्ते प्रयजेद् द्वात्रिंशत्पत्रकेष्विमान् ॥४६७॥
इन्द्रादीन् भूगृहे बाह्ये तदस्त्राणि च संयजेत् ॥४६८॥
एवं सिद्धमनुर्मन्त्री प्रयोगान् कर्तुमर्हति ॥४६९॥

तत्पश्चात् बत्तीस दलों वाले कमल में इन बत्तीस का पूजन करना चाहिये—ध्रुव, धर, सोम, आप, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभात—ये अष्टवसु; महायशस्वी वीरभद्र, शण्ड़, गिरीश, अजैकपाद, अहिर्बुध्न्य, अपराजित पिनाकी, भुवनाधीश्वर, कपाली, दिक्पाल, स्थाणु, भग—ये एकादश रुद्र; विवस्वान्, सूर्य, वेदांग, भानु, इन्द्र, रवि, गभस्ति, यम, सर्वसाक्षी, दिवाकर, चित्र, विष्णु—ये द्वादश सूर्य तथा धाता।

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों और उनके आयुधों का पूजन करना चाहिये। इस प्रकार से मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक प्रयोगों को सम्पन्न करने में समर्थ हो जाता है।।४६२-४६९।।

धनाय कमलैर्जातीपुष्पैश्चन्दनलोलितैः ।
भवेद्धनाधिपतिवन्नीलोत्पलहुतेन च ॥४७०॥
वशयेद्विश्वमखिलं बिल्वपुष्पैर्घनात्यये ॥४७१॥
हुता दीर्घायुषे दूर्वा रक्ताब्जैर्धनवृद्धये ॥४७२॥

धन-प्राप्ति के लिये चन्दनाक्त कमल एवं जातिपुष्पों से हवन करना चाहिये। नीलकमल के हवन से साधक कुबेर के समान हो जाता है। शरद् ऋतु में बिल्वपुष्पों के हवन से समस्त विश्व को वशीभूत किया जा सकता है। दीर्घायु-प्राप्ति के लिये दूर्वा से हवन करना चाहिये। धन-वृद्धि के लिये लाल कमलों से हवन करना चाहिये।।४७०-४७२।।

आधाय कुण्डे विधिवदग्निं पूर्वोक्तवर्त्मना ।
ततो देवं समावाह्य पूजयेदुपचारकैः ॥४७३॥
पञ्चभिर्वा षोडशभिः पूजोपकरणैः पृथक्।
पलाशाश्वत्थखदिरोदुम्बराम्रवटेन्धनैः ।
अग्निं हुत्वालये सम्यग्यज्ञियैरथवेन्धनैः ॥४७४॥
तत्र सम्पूजयेत्सम्यग्राघवं प्रोक्तवर्त्मना ॥४७५॥
लक्षन्तदर्धमथ वा जापयित्वा दशांशतः ।
तिलैर्हुत्वा यद्यदिष्टं तत्तदेवाप्नुयान्नरः ॥४७६॥

बिल्वप्रसूनैरैश्वर्यमर्चितेऽग्नौ हुते भवेत् ॥४७७॥
पलाशकुसुमैर्हुत्वा मन्त्री वै वेदविद्भवेत् ॥४७८॥
दूर्वाभिश्च गुडूचीभिः प्रत्येकमपि वा हुतैः ।
निरामयश्च दीर्घायुर्भवत्येव न संशयः ॥४७९॥

पूर्वकथित रीति से कुण्ड में विधिवत् अग्नि को स्थापित करने के उपरान्त उसमें देवता का सम्यक् रूप से आवाहन करके पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार से पूजन करने के बाद पलाश, पीपल, खैर, गूलर, आम एवं वट की समिधा से अलग-अलग अथवा यज्ञीय समिधा से प्रज्वलित अग्नि में हवन करने के पश्चात् वहीं पर पूर्वकथित विधि से सम्यक् रूप राघव का पूजन करना चाहिये।

तदनन्तर एक लाख अथवा पचास हजार मन्त्रजप करने के बाद तिलों से कृत जप का दशांश हवन करने से मनुष्य अपने अभीष्ट को प्राप्त कर लेता है। उस अर्चित अग्नि में विल्वपुष्पों के हवन से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। पलाशपुष्पों के हवन से मन्त्रज्ञ साधक वेदों का ज्ञाता होता है। दूर्वा और गुरुच को एक साथ मिलाकर अथवा दोनों से अलग-अलग हवन करने से निश्चित रूप से आरोग्य-प्राप्ति के साथ-साथ दीर्घ आयु अवाप्त होती है।।४७३-४७९।।

ध्यात्वाथ मन्मथं रामं सीतामपि रतिं स्मरेत् ।
कवचस्य प्रयोगे यो जपहोमादिकर्मसु ॥४८०॥
रामं च बोधदातारं स्मरन्नाराध्य भक्तितः ।
उपैति सदृशीं कन्यां लाजहोमेन साधकः ॥४८१॥
रामं विधिवदाराध्य ज्वलितेऽग्नौ प्रयोगवित् ।
मधुरत्रययुक्तैर्हि पायसैर्जुहुयात्सुधीः ।
सर्वाधिपत्यं वै द्रव्यं भवेदेव न संशयः ॥४८२॥
तिलैश्च तण्डुलैराज्यैर्हुत्वा लोकाभिपूजितम् ।

जप तथा हवन-काल में राम को कामदेव-स्वरूप एवं सीता को रति-स्वरूपा ध्यान करना चाहिये। कवच के प्रयोग में जो जप-हवन आदि कर्म होते हैं, उस समय राम को भक्ति-सहित ज्ञान-प्रदाता के रूप में स्मरण करना चाहिये। लाजा के हवन से साधक अपने अनुरूप पत्नी को प्राप्त करता है।

प्रयोग के ज्ञाता विद्वान् साधक को विधि-पूर्वक राम की आराधना करके प्रज्वलित अग्नि में मधुरत्रय से समन्वित पायस से हवन करना चाहिये। इससे उसे समस्त द्रव्यों का आधिपत्य प्राप्त होता है; इसमें कोई संशय नहीं है। आज्य-मिश्रित तिल एवं तण्डुल के हवन से साधक लोकपूज्य होता है।।४८०-४८२।।

आरात्संवत्सरं यावत्षट्सहस्त्रं दिने दिने ॥४८३॥
जपेच्च जुहुयादग्नौ तद्दशांशं घृतान्धसा ।
अथमेवान्नदो लोके सर्वेषामपि जायते ॥४८४॥
बिल्वप्रसूनैः कुमुदैस्तथा बिल्वदलैरपि ।
हुत्वा तु लभते लक्ष्मीमचिरादत्र साधकः ॥४८५॥
आराध्य रामं साङ्गं च विधिवद्वत्सरात्सुधीः ।
उदयाद्यावदस्तं स्याज्जपेन्मन्त्रमनन्यधीः ।
फलम्भवति तस्याशु देवानामपि दुर्लभम् ।
वैराज्येनाधिपत्येन मर्त्यानामुत्तमो भवेत् ॥४८६॥

एक वर्ष तक प्रतिदिन छः हजार जप करने के बाद घृत एवं समिधा से अग्नि में दशांश हवन करने से साधक को इस लोक में समस्त अन्नों की प्राप्ति होती है। बिल्वपुष्पों, कुमुदपुष्पों एवं बिल्वपत्रों के हवन से साधक को थोड़े ही दिनों में लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

विद्वान् साधक एक वर्ष तक प्रतिदिन यदि अंगों के सहित राम की सविधि आराधना करते हुये सूर्योदय से सूर्यास्त तक एकाग्र मन से जप करता है तो उसे शीघ्र ही देवताओं को भी दुर्लभ फल प्राप्त होता है। वह राज्य का आधिपत्य प्राप्त करके मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ होता है।।४८३-४८६।।

पूर्णिमायां निशीथिन्यामुदयास्तमनं विधोः ।
संवत्सरं प्रकुर्वीत जपहोमादिकं बुधः ॥४८७॥
रात्रौ यजेद्दिवा होमं कुर्यादेवं परेऽहनि ।
ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु व्रतमेतत्समापयेत् ॥४८८॥
सोमसूर्यादिकं यस्तु व्रतं कुर्वीत मानवः ।
भुक्तिं मुक्तिं च लभते त्विहलोके परत्र च ॥४८९॥

विद्वान् साधक को प्रत्येक पूर्णिमा की रात्रि में चन्द्रोदय से चन्द्रास्त तक संवत्सर-पर्यन्त जप-हवन करना चाहिये। रात्रि में पूजन एवं दिन में हवन करके अपराह्न में ब्राह्मणों को भोजन कराते हुये वर्ष के अन्त में व्रत का समापन करना चाहिये। जो मनुष्य वर्ष-पर्यन्त सोम-सूर्यादिक व्रत करता है, वह इस लोक में भोग प्राप्त करके परलोक में मुक्ति प्राप्त करता है।।४८७-४८९।।

रक्तपद्मैश्च बन्धूकैस्तथा रक्तोत्पलैरपि ।
अभीष्टलोकवश्यार्थं जुहुयादर्चितेऽनले ॥४९०॥

बाह्यैश्वर्याय भोगार्थं जपेल्लक्षमनन्यधीः ।
पत्रैर्बिल्वप्रसूनैर्वा दशांशं जुहुयात्सुधीः ॥४९१॥
समुद्रतीरे गोष्ठे वा लक्षजापी पयोव्रतः ।
पायसेनाज्ययुक्तेन हुत्वा विद्यानिधिर्भवेत् ॥४९२॥
मन्त्रवित्स्वाधिपत्यार्थं शाकाहारो जलान्तरे ।
जपेल्लक्षं च जुहुयाद्बिल्वपत्रैर्दशांशतः ।
तदेव पुनरायाति स्वाधिपत्यं न संशयः ॥४९३॥

अभीष्ट लोक को वशीभूत करने के लिये अर्चित अग्नि में लाल कमल, वन्धूक एवं लाल कुमुद से हवन करना चाहिये। बाह्य ऐश्वर्य एवं भोग-प्राप्ति के लिये एकाग्रचित्त से मन्त्र का एक लाख जप करके बिल्वपुष्पों अथवा बिल्वपत्रों से कृत जप का दशांश हवन करना चाहिये। मात्र दुग्धाहार करते हुये समुद्रतट अथवा गोशाला में मन्त्र का एक लाख जप करके आज्ययुक्त पायस से हवन करने वाला साधक विद्यानिधि होता है।

मन्त्रज्ञ को अपने आधिपत्य-प्राप्ति के लिये शाकाहारी रहते हुये जल में खड़े होकर मन्त्र का एक लाख जप करने के बाद बिल्वपत्रों से कृत जप का दशांश हवन करना चाहिये। ऐसा करने से उसे पुनः अपना आधिपत्य प्राप्त हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है।।४९०-४९३।।

उपोष्य गङ्गामध्यस्थो राममभ्यर्च्य सञ्जपेत् ।
लक्षञ्जपित्वा जुहुयात्कमलान्यथवा तिलान् ।
जातीपुष्पाणि मधुरत्रितयाक्तानि संहुनेत् ॥४९४॥
मन्दभाग्यः स्थिरम्भाग्यमथ रामार्चनाल्लभेत् ।
जपित्वा जुहुयादिन्दुं राज्यश्रियमवाप्नुयात् ।
वैशाखे राघवं कुर्यात्पश्यन्ननिमिषे क्षणः ॥४९५॥
निराहारो जपेल्लक्षं मौनी पञ्चाग्निमध्यगः ।
दशांशं कमलैर्हुत्वा स चारोगी भवेद् ध्रुवम् ॥४९६॥
माघमासे जले स्थित्त्वा कन्दमूलफलाशनः ।
जपेल्लक्षं च जुहुयात्पायसेनार्चितेऽनले ॥४९७॥
दशांशं पुत्रपौत्राद्यैरुपेतः प्राप्नुयाच्छ्रियम् ।
श्रीरामसदृशः पुत्रपौत्राढ्योऽपि प्रजायते ॥४९८॥

उपवास करके गंगा में खड़े होकर राम का अर्चन करके मन्त्र का सम्यक् रूप से एक लाख जप करने के बाद त्रिमधु-सिक्त कमल, तिल अथवा जातिपुष्पों से विधि-पूर्वक

हवन करना चाहिये। इस प्रकार के रामार्चन से मन्द भाग्य वाला व्यक्ति भी सौभाग्यशाली हो जाता है। जप करने के उपरान्त कपूर से हवन करने पर राज्यश्री की प्राप्ति होती है।

वैशाख मास में निराहार रहते हुये निर्निमेष दृष्टि से राघव को देखते हुये मन्त्र का एक लाख जप करने के उपरान्त पञ्चाग्नि के मध्य में स्थित होकर मौन धारण करके कमलों द्वारा कृत जप का दशांश हवन करने वाला निश्चित ही रोगमुक्त हो जाता है।

माघ मास में कन्द-मूल का आहार ग्रहण करते हुये जल में खड़े होकर मन्त्र का एक लाख जप करने के पश्चात् अर्चित अग्नि में पायस से दशांश हवन करने वाला पुत्र-पौत्रादि से समन्वित साधक लक्ष्मी प्राप्त करता है; साथ ही वह श्रीराम के समान पुत्र-पौत्रों से सम्पन्न होता है।।४९४-४९८।।

बलिष्ठैः शत्रुभिर्मन्त्री परिभूतार्थमानसः।
तदा हनहनेत्युक्त्वा तन्नामान्तरितं जपेत्।।४९९।।
ध्यात्वा रघुपतिं क्रुद्धं कालानलमिवापरम्।
आकर्णसशराकृष्टकोदण्डभुजमण्डितम् ।।५००।।
नाशयन्तं रिपून् सर्वांस्तीव्रमार्गणवृष्टिभिः।
रक्तनेत्रं महावीरवर्यमैन्द्रे रथे स्थितम्।।५०१।।
लक्ष्मणादिमहावीरैर्वृतं हनुमदादिभिः।
कोटिकोटिमहावीरैः करोद्धृततरूत्तमैः।।५०२।।
वज्राङ्गैरपि हुङ्कारभीकारसुमहारवैः।
नदद्भिरभिधावद्भिः समरेऽरिगणं प्रति।।५०३।।
एवं ध्यात्वा निराहारो मारणाय रिपोः पुनः।
जुहुयाच्छाल्मलीपुष्पैर्दशांशं मन्त्रसाधकः।
अत्यन्तसुसमृद्धोऽपि न शत्रुरवशिष्यते।।५०४।।
वैरिणं रावणं ध्यात्वा तथात्मानं रघूद्वहम्।
विधाय पूर्ववत्सर्वमनायासेन मारयेत्।।५०५।।

बलवान् शत्रु से पराजित मन्त्री को उस शत्रु के पराभव की इच्छा से मन्त्र के मध्य में उसके नाम के साथ 'हन हन' का उच्चारण करते हुये मन्त्र का जप करना चाहिये।

कर्ण-पर्यन्त बाणों के सहित आकृष्ट धनुष से विभूषित भुजाओं वाले, इन्द्र के रथ पर आरूढ़, लाल-लाल आँखों वाले महावीर, तीव्र बाणवर्षा करते हुये शत्रुओं का विनाश करते हुये द्वितीय कालाग्नि-सदृश क्रुद्ध राम लक्ष्मण आदि महावीरों से चारो ओर से घिरे हुये हैं; युद्धक्षेत्र में हाथों में उत्तम वृक्षों को लिये हुये वज्र-सदृश अंगों

वाले हनुमान आदि करोड़ों वीर अपने गर्जन से भयंकर शब्द करते हुये शत्रुओं के प्रति दौड़ रहे हैं—इस प्रकार ध्यान करके निराहार रहते हुये शत्रु के मारण के लिये साधक द्वारा शाल्मली (सेमर)-पुष्पों से कृत जप का दशांश हवन करने से अत्यन्त समृद्ध शत्रु भी अवशिष्ट नहीं रहता अर्थात् समस्त शत्रुओं का विनाश हो जाता है।

शत्रुओं का रावणरूप में एवं स्वयं का रामरूप में ध्यान करते हुये पूर्ववत् अनुष्ठान करने से साधक अनायास ही समस्त शत्रुओं को नष्ट कर देता है।।४९९-५०५।।

सीताहरणशोकाच्च क्रुद्धीभूतमचेतसम्।
जपेद्रघुपतिं ध्यायन्निराहारो जले वसन्।
दशांशं च तिलैर्हुत्वा स्तम्भयेच्छत्रुसंहतिम् ॥५०६॥
निधाय वायुबीजेन यन्नम त्रासयेति च।
जपेन्मन्त्रं निराहारो जुहुयाच्च तिलैरपि ॥५०७॥

निराहार रहते हुये जल में खड़े होकर सीताहरणरूप शोक के कारण क्रुद्ध होकर चेतना-रहित रघुपति का ध्यान करते हुये मन्त्र का जप करना चाहिये। तत्पश्चात् कृत जप का दशांश तिल से हवन करने से शत्रु-समूह का स्तम्भन होता है। एतदर्थ मन्त्र के साथ 'यं नमः त्रासय' जोड़कर निराहार रहकर मन्त्र का जप करके तिलों से भी हवन किया जा सकता है।।५०६-५०७।।

रामं ध्यात्वा विषण्णन्तं सीतान्वेषणकातरम्।
रामभद्रं चिरं साक्षाद्रावणं चापि वैरिणम् ॥५०८॥
समुद्रतीरे लङ्कायां हेमप्राकारसन्निधौ।
सुग्रीवादिभिरन्यैश्च दैवतैर्नारदादिभिः ॥५०९॥
उपास्यमानं सदसि ध्यात्वा देवं सलक्ष्मणम्।
बिभीषणायागताय ददतं शरणार्थिने ॥५१०॥
वरदानं जपेल्लक्षं जुहुयात्पङ्कजैरपि।
स्वस्थानमानयेच्छीघ्रं राजानमथवा प्रभुम् ॥५११॥
निमील्य चक्षुः स्नेहात्तु चोपलभ्य पुनः पुनः।
प्रमोदयन्तं सहसा त्वचिरादानयेत्प्रियम् ॥५१२॥
रामं ध्यात्वा जपेल्लक्षं हुत्वा रक्ताम्बुजैरपि।
सम्मोहयति वेगेन राजानमपि वा प्रभुम् ॥५१३॥

विषण्ण एवं सीता के अन्वेषण-हेतु कातर राम का उनके शत्रु रावण के सहित ध्यान करके, समुद्रतट पर लंका में सुवर्णप्राकार के निकट सुग्रीवादि अन्य वीरों के

साथ-साथ देवताओं एवं नारद आदि ऋषियों द्वारा अपने-अपने आवास-स्थान पर उपास्यमान भगवान् राम का लक्ष्मण-सहित ध्यान करके, साथ ही शरण में आये हुये विभीषण को वर प्रदान करते हुये राम का ध्यान करके मन्त्र का एक लाख जप करने के पश्चात् कमलपुष्पों से कृत जप का दशांश हवन करने वाला साधक राजा अथवा अपने स्वामी को शीघ्र ही अपने स्थान पर साक्षात् उपस्थित पाता है। वे राजा अथवा प्रभु उसे प्राप्त करके उसके प्रति अतिशय स्नेह के कारण उसे बार-बार आनन्दित करते हैं एवं अचानक ही उसके द्वारा अभीप्सित वस्तु को उसके समक्ष उपस्थित कर देते हैं।

राम का ध्यान करके मन्त्र का एक लाख जप करने के उपरान्त लाल कमलों से हवन करने वाला साधक शीघ्रता-पूर्वक अपने राजा अथवा प्रभु श्रीराम को सम्मोहित कर लेता है।।५०८-५१३।।

तारादिर्मुक्तये मन्त्रो रमादिर्भुक्तये भवेत्।
वाक्सिद्धये च वागादिः सर्ववश्याय मन्मथः।
ताराद्यैः पुटितान् मन्त्रान् सर्वार्थान् विनियोजयेत्।।५१४।।

मुक्ति-प्राप्ति के लिये 'रामाय नम:' मन्त्र के आरम्भ में तार (ॐ) का संयोजन करके जप करना चाहिये। इसी प्रकार भोग-प्राप्ति के लिये मन्त्र के आदि में 'श्रीं' का, वाक्सिद्धि के लिये 'ऐं' का एवं सभी को वशीभूत करने के लिये 'क्लीं' का संयोजन करके जप करना चाहिये। ॐ आदि से पुटित मन्त्रों का सर्वार्थ-सिद्धि के लिये विनियोग करना चाहिये।।५१४।।

एकाक्षररामनन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि स्वारोचिषसमुद्भवम्।
रामस्यैकाक्षरं मन्त्रं कीर्त्यते स तु रामिति।।५१५।।
ब्रह्मा मुनिः स्याद्गायत्रं छन्दो रामोऽस्य देवता।
मूर्तिपञ्जरनामानं तत्त्वन्यासं च कारयेत्।।५१६।।
षड्दीर्घसुसमायुक्तबीजेनैव षडङ्गकम्।
ध्यानपूजादिकं प्राग्वद्रामलक्षं जपेन्मनुम्।।५१७।।

राम का एकाक्षर मन्त्र—अब मैं स्वारोचिष मन्वन्तर में अवतरित राम के एकाक्षर मन्त्र को कहता हूँ; वह मन्त्र है—'रां'। इस मन्त्र के ऋषि ब्रह्मा, छन्द गायत्री एवं देवता राम हैं। इसमें मूर्तिपञ्जर-नामक तत्त्वन्यास करना चाहियें। बीजमन्त्र के छ: दीर्घ स्वरूपों से इसका षडङ्गन्यास करना चाहिये। इस मन्त्र का ध्यान-पूजन आदि सबकुछ पूर्ववत् करके मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिये।।५१५-५१७।।

द्व्यक्षररामममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि तृतीयं तु मनोर्विधिम्।
राम इत्येष कथितो द्व्यक्षरो भुक्तिमुक्तिदः ॥५१८॥
एकाक्षरोक्तमृष्यादि स्यादाद्यन्तं षडङ्गकम्।
ध्यानपूजाप्रयोगादि सर्वं ज्ञेयं षडर्णवत् ॥५१९॥

द्व्यक्षर राम-मन्त्र—अब मैं राम के दो अक्षरों वाले मन्त्र की विधि को कहता हूँ। 'राम' यह द्व्यक्षर मन्त्र भुक्ति एवं मुक्ति प्रदान करने वाला कहा गया है। इस मन्त्र के ऋषि आदि एकाक्षर मन्त्र के समान ही होते हैं। 'रा' एवं 'म' की तीन आवृत्ति से इसका षडङ्गन्यास करना चाहिये। इस मन्त्र के ध्यान-पूजन-प्रयोग आदि सबकुछ षडक्षर मन्त्र के समान जानना चाहिये।।५१८-५१९।।

श्रीवेदशतविंशानामयुतस्य लिखेत्क्रमात्।
एकोपचयकोष्ठेषु मन्त्रमेनं प्रपूजयेत्।
उपचारैः षोडशभी रामं ध्यात्वा यथाविधि ॥५२०॥
कृष्णपक्षतिमारभ्य पौर्णमास्यां समापयेत्।
जायन्ते तेन कार्याणि ह्यनुश्लोकदलैः प्रिये ॥५२१॥

हे प्रिये! कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ करके पूर्णिमा-पर्यन्त प्रतिदिन क्रमशः एकाधिक कोष्ठों में अलग-अलग एक हजार चार सौ बीस बार राम का नाम लिखने के पश्चात् राम का ध्यान करके समस्त कोष्ठों में इस मन्त्र के द्वारा षोडश उपचारों से विधिपूर्वक पूजन करने से निम्न श्लोकों के दलों में कथित कार्य सम्पन्न होते हैं।।५२०-५२१।।

गजाश्ववृषबालानां क्षुद्ररोगो विनश्यति।
षड्कर्माणि विनश्यन्ति कृत्याश्चारिप्रणोदिताः ॥५२२॥
बन्धमोक्षो रोगनाशः सन्तानोद्यमलब्धयः।
गतराज्यधनादीनां प्राप्तिः ख्यातिर्धनागमः।
विधानं वा महासिद्धिर्भवेद्वा चक्रवर्तिता ॥५२३॥

हाथी, घोड़े, बैल और बालकों के क्षुद्र रोगों का विनाश होता है; आभिचारिक आदि षट्कर्मों के साथ-साथ शत्रु द्वारा प्रेरित कृत्याओं का विनाश होता है। बन्धन से मुक्ति होने के साथ-साथ रोगों का विनाश होता है एवं सन्तान तथा उद्यम की प्राप्ति होती है। परहस्तगत राज्य एवं धन की प्राप्ति होती है। ख्याति-प्राप्ति के साथ-साथ धनागम होता है। महासिद्धि-विधान अथवा चक्रवर्तित्व की प्राप्ति होती है।।५२२-५२३।।

त्र्यक्षररामन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चतुर्थन्तु मनोर्विधिम्।
तारमायारमानङ्गवाक्स्वबीजैश्च षड्विधः।
द्व्यक्षरो मन्त्रराजस्तु त्र्यक्षरः परिजायते ॥५२४॥
न्यासपूजाप्रयोगादि सर्वं पूर्ववदाचरेत् ॥५२५॥

त्र्यक्षर राम-मन्त्र—अब मैं राम के चतुर्थ मन्त्र की विधि को कहता हूँ। 'राम' इस द्व्यक्षर मन्त्र के साथ क्रमशः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं एवं रां लगाने से तीन अक्षरों के छः मन्त्र बनते हैं (जैसे—ॐ राम, ह्रीं राम, श्रीं राम, क्लीं राम, ऐं राम और रां राम)। इन सभी मन्त्रों का न्यास, पूजन, प्रयोग आदि सब कुछ पूर्ववत् करना चाहिये।।५२४-५२५।।

पञ्चाक्षररामन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि षष्ठमन्वन्तरोद्भवम्।
रामाय नम इत्येष मन्त्रः पञ्चाक्षरो मतः ॥५२६॥
विश्वामित्रो मुनिः प्रोक्तः पङ्क्तिश्छन्दोऽस्य देवता।
रामभद्रो बीजशक्ती प्रथमार्णस्ततोऽन्तिमः ॥५२७॥
भ्रूमध्ये हृदि नाभ्यंघ्र्योः पादयोर्विन्यसेन्मनुम्।
षडङ्गं पूर्ववत्कार्यं मन्त्रार्णैर्मनुनास्त्रकम् ॥५२८॥

पञ्चाक्षर राम-मन्त्र—अब मैं छठे मन्वन्तर में उद्भूत राम के पञ्चाक्षर मन्त्र को कहता हूँ। मन्त्र है—रामाय नमः। इस मन्त्र के ऋषि विश्वामित्र, छन्द पंक्ति, देवता रामभद्र, बीज रा एवं म शक्ति है। मन्त्रवर्ण रा का भ्रूमध्य में, मा का हृदय में, य का नाभि में, न का कन्धों में और मः का पैरों में न्यास करना चाहिये। मन्त्रवर्णों से पूर्ववत् षडंगन्यास करके 'रामाय नमः' मन्त्र से अस्त्रन्यास करना चाहिये।।५२६-५२८।।

मध्ये वने कल्पतरोर्मूले वै पुष्पकासने।
लक्ष्मणेन प्रगुणितं चाक्ष्णः कोणेन सायकम्।
अवेक्षमाणं जानक्या कृतव्यजनमीश्वरम् ॥५२९॥
जटाभारलसच्छीर्षं श्यामं मुनिगणावृतम्।
लक्ष्मणेन धृतच्छत्रमथ वा पुष्पकोपरि ॥५३०॥
दशास्यमथनं शान्तं ससुग्रीवबिभीषणम्।
विजयार्थी विशेषेण वर्णलक्षं जपेन्मनुम्।
प्राग्वद्धोमस्तर्पणादि प्रयोगाद्यं च साधयेत् ॥५३१॥

कानन के मध्य में कल्पवृक्ष के नीचे पुष्प के आसन पर विराजमान, लक्ष्मण द्वारा सीधे किये गये बाण को तिरछी नजरों से देखते हुये, जानकी द्वारा पंखा झले जाते हुये, माथे पर जटाओं से सुशोभित, मुनिगणों से घिरे हुये एवं लक्ष्मण द्वारा छत्र धारण किये हुये अथवा दशमुख का वध करने वाले, सुग्रीव-सहित विभीषण के साथ पुष्पक विमान पर शान्त मुद्रा में विराजमान राम का ध्यान करते हुये विजय की कामना वाले को मन्त्र का वर्णलक्ष (पाँच लाख) जप करने के उपरान्त पूर्ववत् होम-तर्पण आदि करने के पश्चात् प्रयोगादि का साधन करना चाहिये।।५२९-५३१।।

सप्तममन्वन्तरोद्भूतराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सप्तमे जातमन्त्रकम्।
रामचन्द्रो रामभद्रो ङेऽन्तो नतियुतो द्विधा ।।५३२।।
सप्ताक्षरो निगदितो मन्त्रः सप्तर्षिसेवितः।
ध्यानपूजाप्रयोगादि निखिलन्तु षडर्णवत् ।।५३३।।

सप्तम मन्वन्तरोद्भूत राम-मन्त्र—अब मैं सातवें मन्वन्तर में अवतरित राम के मन्त्र को कहता हूँ। सप्तर्षियों द्वारा उपासित सात अक्षरों वाला यह मन्त्र दो प्रकार का कहा गया है, जो इस प्रकार है—रामचन्द्राय नमः एवं रामभद्राय नमः। इस मन्त्र के ध्यान, पूजन, प्रयोग आदि सभी कुछ षडक्षर मन्त्र के समान होते हैं।।५३२-५३३।।

सावर्णिमन्वन्तरोद्भूतराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रं सावर्णिकोद्भवम्।
तारादिषड्भिः संयुक्तो द्विधा सप्ताक्षरो मतः ।।५३४।।
अष्टाक्षरो द्वादशधा कीर्तितो वाञ्छितार्थदः।
सर्वं षडर्णवज्ज्ञेयं ध्यानपूजाजपादिकम् ।।५३५।।

सावर्णि मन्वन्तरोद्भूत राम-मन्त्र—अब मैं सावर्णि मन्वन्तर में उद्भूत राम के मन्त्र को सम्यक् रूप से कहता हूँ। सप्ताक्षर मन्त्र में ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं रां लगाने से उपरोक्त दोनों मन्त्रों के आठ अक्षरों वाले बारह भेद होते हैं; जो कि वाञ्छितार्थ-प्रदायक कहे गये हैं। इन मन्त्रों के ध्यान, पूजन, जप आदि सभी कुछ षडक्षर मन्त्र के समान जानने चाहिये।।५३४-५३५।।

नवममन्वन्तरोद्भूतराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रान्नवमसम्भवान्।
तारो रामश्चतुर्थ्यन्तः क्रोधान्तो वह्निवल्लभः ।।५३६।।
अष्टार्णोऽयं परो मन्त्रो मुन्यादिः स्यात्षडर्णवत्।
नाशनः सर्वदोषाणां संग्रामे विजयप्रदः ।।५३७।।

नवम मन्वन्तरोद्भूत राम-मन्त्र—अब मैं नवम मन्वन्तर में होने वाले राम के मन्त्र को कहता हूँ। आठ अक्षरों का यह श्रेष्ठ मन्त्र है—ॐ रामाय क्रुद्धाय नमः। इस मन्त्र के ऋषि आदि षडक्षर मन्त्र के समान होते हैं। यह मन्त्र समस्त दोषों का विनाशक होने के साथ-साथ युद्ध में विजय प्रदान करने वाला होता है।।५३६-५३७।।

दशममन्वन्तरोद्भूतराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मन्त्रान् दशमसम्भवान्।
क्रूंह्रीं नमश्च रामाय ह्रीमित्यष्टाक्षरः परः ॥५३८॥
ऋषिः सदाशिवः प्रोक्तो गायत्रं छन्द उच्यते।
रामचन्द्रोऽस्य मन्त्रस्य देवता परिकीर्तितः ॥५३९॥
नमो रामाय ह्रीं हृच्च नमो रामाय ह्रीं शिरः।
दीर्घया माययाङ्गानि तारपञ्चार्णयुक्तया ॥५४०॥
रामं त्रिनेत्रं सोमार्धधारिणं शूलिनं वरम्।
भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गं कपर्दिनमुपास्महे ॥५४१॥
रामाभिरामां सौन्दर्यसीमां सोमावतंसिनीम्।
पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरां ध्यायेत्त्रिलोचनाम्।
रामशक्तिन्तु सीताख्यां वर्णलक्षं जपेन्मनुम् ॥५४२॥
होमपूजादिकं सर्वं षडक्षरवदीरितम्।
विशेषतो भोगदोऽसौ संग्रामे विजयप्रदः ॥५४३॥

दशम मन्वन्तरोद्भूत राम-मन्त्र—अब मैं दशम मन्वन्तर में होने वाले राम के मन्त्र को कहता हूँ। आठ अक्षरों का वह श्रेष्ठ मन्त्र है—क्रूं ह्रीं नमः रामाय ह्रीं। इसके ऋषि सदाशिव, छन्द गायत्री एवं देवता रामचन्द्र कहे गये हैं। इसका षडङ्ग न्यास इस प्रकार करना चाहिये—नमो रामाय ह्रीं हृदयाय नमः, नमो रामाय ह्रीं शिरसे स्वाहा, ह्रूं ॐ नमो रामाय शिखायै वषट्, ह्रैं ॐ नमो रामाय कवचाय हुम्, ह्रौं ॐ नमो रामाय नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्रः ॐ नमो रामाय अस्त्राय फट्।

तत्पश्चात् तीन नेत्रों वाले, अर्धचन्द्र एवं उत्तम शूल को धारण करने वाले, समस्त अंगों में भस्म लपेटे हुये कपर्दी-स्वरूप राम की मैं उपासना करता हूँ। साथ ही अत्यन्त मनोहर, सौन्दर्य की पराकाष्ठा, शीर्ष पर चन्द्रमा को धारण की हुई, हाथों में पाश अंकुश धनुष एवं बाण धारण की हुई, तीन नेत्रों वाली सीता-नाम्नी राम की शक्ति का ध्यान करके मन्त्र का वर्णलक्ष अर्थात् आठ लाख की संख्या में जप करना चाहिये। इसके बाद हवन-पूजन आदि सब कुछ षडक्षर मन्त्र के समान करना चाहिये। यह मन्त्र विशेषतः भोग प्रदान करने वाला एवं युद्ध में विजय प्रदान करने वाला है।।५३८-५४३।।

एकादशमन्वन्तरोद्भूतराममन्त्राः

अथैकादशसम्भूतान् राममन्त्रान् वदाम्यहम् ।
सप्तार्णो यो मनुः प्रोक्तः षड्भिस्तारादिकैः पृथक् ॥५४४॥
सम्पुटिता द्वादशधा नवार्णा मनवः स्मृताः ।
ध्यानपूजादिकं सर्वं तेषां सप्तार्णवच्चरेत् ॥५४५॥

एकादश मन्वन्तरोद्भूत राम-मन्त्र—अब मैं एकादश मन्वन्तर में समुद्भूत राम के मन्त्र को कहता हूँ। तार आदि छः बीजों से सम्पुटित सप्ताक्षर मन्त्र से ही इनके बारह मन्त्र बनते हैं, जिनमें नव अक्षर होते हैं; जैसे—ॐ रामचन्द्राय नमः ॐ, ह्रीं रामचन्द्राय नमः ह्रीं, श्रीं रामचन्द्राय नमः श्रीं, क्लीं रामचन्द्राय नमः क्लीं, ऐं रामचन्द्राय नमः ऐं, रां रामचन्द्राय नमः रां, ॐ रामभद्राय नमः ॐ, ह्रीं रामभद्राय नमः ह्रीं, श्रीं रामभद्राय नमः श्रीं, क्लीं रामभद्राय नमः क्लीं, ऐं रामभद्राय नमः ऐं, रां रामभद्राय नमः रां। इन मन्त्रों के ध्यान, पूजन आदि सभी कुछ सप्ताक्षर मन्त्र के समान ही होते हैं।।५४४-५४५।।

द्वादशमन्वन्तरोद्भूतराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि द्वादशान्तरसम्भवम् ।
जानकीवल्लभो ङेऽन्तः स्वाहान्तश्च हुमादिकः ॥५४६॥
दशाक्षरोऽयं मन्त्रः स्याद्वसिष्ठोऽस्य मुनिः स्वराट् ।
छन्दश्च देवता रामः सीतापाणिपरिग्रहः ॥५४७॥
आदिबीजं द्विषः शक्तिरङ्गं षड्दीर्घके मतम् ।
शिरोललाटभ्रूमध्यनेत्रकण्ठस्तनेष्वपि ॥५४८॥
नाभ्यूरुजानुपादेषु दशार्णान् विन्यसेन्मनोः ।
अयोध्यानगरे चैव विचित्रे स्वर्णमण्डपे ॥५४९॥
मन्दारपुष्पैराबद्धविताने तोरणाञ्चिते ।
सिंहासने समारूढं पुष्पकोपरि राघवम् ॥५५०॥
रक्षोभिर्हरिभिर्देवैर्दिव्ययानगतैः शुभैः ।
संस्तूयमानं मुनिभिः प्रह्वैरुपसेवितम् ॥५५१॥
सीतालंकृतवामाङ्गं लक्ष्मणेनोपशोभितम् ।
श्यामं प्रसन्नवदनं सर्वाभरणभूषितम् ॥५५२॥
ध्यायन्नेवं जपेन्मन्त्रं वर्णलक्षमनन्यधीः ।
जपपूजाप्रयोगादि सर्वमस्य षडर्णवत् ॥५५३॥

द्वादश मन्वन्तर के राम-मन्त्र—अब मैं बारहवें मन्वन्तर में समुद्भूत राम के मन्त्र का निरूपण करता हूँ। वह दशाक्षर मन्त्र है—हुं जानकीवल्लभाय स्वाहा। इस मन्त्र के ऋषि वशिष्ठ, छन्द स्वराट् एवं देवता सीतापाणि-परिग्रह राम हैं। हुं बीज और स्वाहा शक्ति है। हां हीं हूं हैं हौं ह: से इसका षडङ्गन्यास किया जाता है। मन्त्र के दश वर्णों से क्रमश: शिर, ललाट, भ्रूमध्य, नेत्र, कण्ठ, स्तन, नाभि, ऊरु, जानु एवं चरण—इन दश अंगों में वर्णन्यास करना चाहिये।

तदनन्तर अयोध्या-नामक नगरी में मन्दार-पुष्प-ग्रथित चँदोवा एवं तोरणों से सुसज्जित विचित्र स्वर्णमण्डप में सिंहासन के ऊपर विकीर्ण पुष्पों पर विराजमान, रक्षक-स्वरूप वानरों एवं दिव्य यानों पर आरूढ़ देवताओं द्वारा सम्यक् रूप से स्तूयमान, चारो ओर से प्रसन्नचित्त मुनियों द्वारा घिरे हुये, सीता से अलंकृत वाम अंग वाले, लक्ष्मण के द्वारा सुशोभित, श्याम वर्ण वाले, प्रसन्न मुख वाले, समस्त आभरणों से विभूषित राघव का ध्यान करते हुये मन्त्र का वर्णलक्ष अर्थात् दश लाख की संख्या में एकाग्रचित्त होकर जप करना चाहिये। इस मन्त्र के जप, पूजन, प्रयोग आदि समस्त कृत्य पूर्वोक्त षडक्षर मन्त्र के समान होते हैं।।५४६-५५३।।

त्रयोदशमन्वन्तरोद्भूतराममन्त्र:

अथ त्रयोदशे जातं राममन्त्रं वदाम्यहम्।
रामो ङेऽन्तो धनुष्पाणिस्तथा स्याद्वह्निसुन्दरी ।।५५४।।
दशाक्षरो मुनिर्ब्रह्मा विराट् छन्दोऽस्य देवता।
राक्षसान्तकरो रामो रां बीजं परिकीर्तितम् ।।५५५।।
स्वाहा शक्ति: स्वबीजेन षडङ्गानि समाचरेत्।
वर्णन्यासं तथा ध्यानं पुरश्चर्याविधिं तथा ।।५५६।।
दशाक्षरोक्तवत्कुर्याच्चापबाणधरं स्मरेत्।
विशेषाज्जयदश्चायं सर्ववाञ्छितदायक: ।।५५७।।

त्रयोदश मन्वन्तर में समुद्भूत राम का मन्त्र—अब मैं तेरहवें मन्वन्तर में प्रकटित राम के मन्त्र को कहता हूँ। दश अक्षरों वाला वह मन्त्र है—रामाय धनुष्पाणये स्वाहा। इस दशाक्षर मन्त्र के ऋषि ब्रह्मा, छन्द विराट्, देवता राक्षसों के विनाशक राम, बीज रां एवं शक्ति स्वाहा कहे गये हैं। बीजमन्त्र के छ: दीर्घ स्वरूपों (रां रीं रूं रैं रौं र:) से इसका षडङ्गन्यास किया जाता है। इसका वर्णन्यास, ध्यान एवं पुरश्चरण-विधान दशाक्षर मन्त्र के समान करना चाहिये। ध्यान के समय सर्वाभरण-भूषित के स्थान पर धनुष एवं बाण धारण किये हुये स्वरूप का ध्यान करना चाहिये। यह मन्त्र विशेषतया

विजय प्रदान करने वाला एवं सामान्यतया समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है।।५५४-५५७।।

अन्यमन्वन्तरोद्भूतराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चान्यमन्वन्तरोद्भवम्।
ॐ हृद्भगवते रामचन्द्रायेति मनुर्मतः ॥५५८॥
अर्काणों द्विविधोऽप्यस्य मुनिर्ध्यानजपादिकम्।
दशाक्षरवदेव स्यादयं कल्याणकारकः ॥५५९॥

अन्य मन्वन्तरोद्भूत राम के मन्त्र—अब मैं अन्य (चौदहवें) मन्वन्तर में अवतरित राम के मन्त्र को कहता हूँ। बारह अक्षरों वाला दो प्रकार का वह मन्त्र इस प्रकार है— ॐ नमो भगवते रामचन्द्राय, ॐ नमो भगवते रामभद्राय। इस मन्त्र के ऋषि, ध्यान, जप आदि दशाक्षर मन्त्र के समान होते हैं। यह मन्त्र साधक का कल्याण करने वाला कहा गया है।।५५८-५५९।।

हनुमदुपासितराममन्त्रः

अथ वक्ष्ये वायुजातोपासितं मन्त्रनायकम्।
श्रीराम जयरामेति जयराम जयेति च ॥५६०॥
त्रयोदशाक्षरो मन्त्रः सर्वमस्य दशार्णवत्।
पदत्रयैर्द्विरावृत्त्या चाङ्गन्यासं समाचरेत् ॥५६१॥

हनुमान् द्वारा उपासित राम-मन्त्र—अब मैं पवनपुत्र हनुमान द्वारा उपासित मन्त्रराज को कहता हूँ। तेरह अक्षरों का वह मन्त्र है—श्रीराम जय राम जय राम जय। इस मन्त्र के जपादि समस्त कृत्य दशाक्षर मन्त्र के समान होते हैं। मन्त्र के तीन पदों की दो आवृति से इसका षडङ्गन्यास किया जाता है।।५६०-५६१।।

भरतोपासितराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि भरतोपासितं मनुम्।
सतारं हृद्भगवते रामो ङेऽन्तो महा ततः।
पुरुषाय पदं पश्चाद् द्विठान्तोऽष्टादशाक्षरः ॥५६२॥
विश्वामित्रो मुनिश्छन्दो गायत्रं देवता मता।
दशास्यदर्पदलनो रामभद्रः प्रकीर्तितः ॥५६३॥
तारो बीजं नमः शक्ती रामचन्द्रः षडङ्गकम्।
मूलमन्त्रैः कोशलेन्द्रः सत्यसन्धस्ततः परम् ॥५६४॥

रावणान्तकनामा च सर्वलोकहितस्तथा।
शश्वत्प्रसन्नवदनश्चतुर्थीं नमसा वदेत् ।।५६५।।
नन्दिग्रामस्योपवने भरतायतनेऽर्चिते।
रम्ये सुगन्धपुष्पाद्यैर्वृक्षवृन्दैश्च मण्डिते ।।५६६।।
निष्कोणभेरीपटहशङ्खतूर्यादिनिःस्वने।
पवित्ररूपे परितो जयमङ्गलभाषिते ।।५६७।।
पाटीरघुसृणोशीरकर्पूरागुरुगन्धिते।
नानाकुसुमसौरभ्यवाहिगन्धवहान्विते।
देवगन्धर्वनारीभिर्गायत्र्यादिविभूषिते ।।५६८।।
सिंहासनसमारूढं पुष्पकोपरि राघवम्।
सौमित्रिसीतासहितं जटामुकुटशोभितम् ।।५६९।।
चापबाणधरं श्यामं ससुग्रीवबिभीषणम्।
हत्वा रावणमायान्तं कृतत्रैलोक्यरक्षणम् ।।५७०।।
रामभद्रं हृदि ध्यायन्दशलक्षं जपेन्मनुम्।
होमपूजाप्रयोगादि सर्वं ज्ञेयं षडर्णवत् ।।५७१।।

भरत द्वारा उपासित राम-मन्त्र—अब मैं भरत द्वारा उपासित राम-मन्त्र को कहता हूँ। अट्ठारह अक्षरों का वह मन्त्र है—ॐ नमो भगवते रामाय महापुरुषाय स्वाहा। इस मन्त्र के ऋषि विश्वामित्र, छन्द गायत्री एवं देवता दशमुख के दर्प को चूर-चूर करने वाले रामभद्र कहे गये हैं। ॐ बीज एवं नम: शक्ति है। मूलमन्त्र के छ: पदों से इसका षडङ्गन्यास किया जाता है।

तत्पश्चात् कोशलेन्द्राय सत्यसन्धाय रावणान्तकाय सर्वलोकहिताय शश्वत्प्रसन्नवदनाय नम: कहकर प्रणाम करते हुये नन्दिग्राम के उपवन में रमणीय सुगन्धित पुष्पों वाले वृक्षों से घिरे हुये, भेरी, पटह, शंख, तुरही आदि की ध्वनि से निनादित, पवित्र जयघोष से पूरित, पाटीर (चन्दन) घुसृण (केशर) उशीर (खश) कपूर एवं अगुरु से सुगन्धित, अनेकविध पुष्पों की सुगन्धि से परिपूर्ण वायु से समन्वित, देवाङ्गनाओं गन्धर्वपत्नियों गायत्री आदि से विभूषित भरत के निवासस्थान में पूजित; लक्ष्मण एवं सीता के सहित पुष्पक विमान के ऊपर सिंहासन पर आसीन, जटा एवं मुकुट से सुशोभित, रावण का वध कर वापस आते हुये, त्रैलोक्य की रक्षा करने वाले रामभद्र का हृदय में ध्यान करके मन्त्र का दश लाख की संख्या में जप करना चाहिये। इसका होम-पूजन आदि सबकुछ षडक्षर मन्त्र के समान ही जानना चाहिये।।५६२-५७१।।

विभीषणोपासितराममन्त्रः

अथ वक्ष्ये बिभीषणोपासितं मोक्षदायकम्।
राज्यश्रियाः प्रदातारं भक्तानामभयप्रदम् ॥५७२॥
रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
दशास्यान्तक रां रक्ष देहि दापय मे श्रियम् ॥५७३॥
द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रो विश्वामित्रो मुनिर्मतः।
छन्दोऽनुष्टुब्देवता तु रामभद्रः प्रकीर्त्तितः ॥५७४॥
चतुःसागरवेदाब्धिवस्विभैरङ्गकल्पनम्।
मस्तके च ललाटे च नेत्रयोः कर्णयोस्तथा ॥५७५॥
गण्डयोश्च नसोरास्ये ततश्च भुजमूलयोः।
कूर्परद्वितये वापि मणिबन्धद्वये तथा ॥५७६॥
कण्ठे च स्तनयोर्हृत्के नाभौ च जठरे कटौ।
मेढ्रे पायावूरुमूलद्वये जान्वोश्च गुल्फयोः ॥५७७॥
मन्त्रावर्णान्न्यसेत्तेन जपादावधिकारवान्।
पूर्वोक्तध्यानमत्रापि लक्षं च प्रयतो जपेत्।
पीतं वा चिन्तयेद्रामं धनार्थं यो मनुं जपेत् ॥५७८॥

विभीषण द्वारा उपासित राम-मन्त्र—अब मैं विभीषण द्वारा उपासित राम-मन्त्र को कहता हूँ; जो कि मोक्ष प्रदान करने वाला, राज्यलक्ष्मी को देने वाला एवं भक्तों को अभय प्रदान करने वाला है। बत्तीस अक्षरों का वह मन्त्र इस प्रकार है—

रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
दशास्यान्तक रां रक्ष देहि दापय मे श्रियम्।।

इस मन्त्र के ऋषि विश्वामित्र, छन्द अनुष्टुप् एवं देवता रामभद्र कहे गये हैं। मन्त्र के क्रमशः चार, चार, चार, चार, आठ एवं आठ वर्णों से इसका षडङ्गन्यास करना चाहिये। तत्पश्चात् मन्त्र के बत्तीस वर्णो को शरीर के बत्तीस अंगों में न्यस्त करना चाहिये; वे अङ्ग इस प्रकार कहे गये हैं—मस्तक, ललाट, दक्ष नेत्र, वाम नेत्र, दक्ष कर्ण, वाम कर्ण, दक्ष कपोल, वाम कपोल, दक्ष नासापुट, वाम नासापुट, ककुद, दक्ष भुजमूल वाम भुजमूल, दक्ष कूर्पर, वाम कूर्पर, दक्ष मणिबन्ध, वाम मणिबन्ध, कण्ठ, दक्ष स्तन, वाम स्तन, हृदय, नाभि, उदर, कटि, लिंग, पायु, दक्ष ऊरुमूल, वाम ऊरुमूल, दक्ष जानु, वाम जानु, दक्ष गुल्फ एवं वाम गुल्फ।

इस प्रकार से मन्त्रवर्णों का न्यास करने के बाद ही साधक जप का अधिकारी होता

है। यहाँ पर भी ध्यान पूर्ववत् ही करना चाहिये। तत्पश्चात् सावधान होकर मन्त्र का एक लाख जप करना चाहिये। धन-प्राप्ति की कामना से मन्त्रजप करने वाले को पीतवर्ण स्वरूप वाले राम का चिन्तन करना चाहिये।।५७२-५७८।।

लक्ष्मणोपासितराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि लक्ष्मणोपासितं मनुम्।
तारो नमो भगवते ङेऽन्तः स्याद्रघुनन्दनः ॥५७९॥
रक्षोघ्नविशदायेति मधुरेति पदं ततः।
प्रसन्नवदनायेति ततश्चामिततेजसे ॥५८०॥
बलायेति च रामाय विष्णवे नम इत्ययम्।
सप्तचत्वारिंशदर्णो मालामन्त्र उदीरितः ॥५८१॥
मुनिः पितामहश्छन्दः स्यादनुष्टुप् च देवता।
राज्याभिषिक्तो रामश्चों बीजं शक्तिर्नमस्त्विति ॥५८२॥
सप्तषट्सप्तदशषट्रुद्रसङ्ख्यैः षडङ्गकम्।
शिरोमुखभ्रूमध्येषु नेत्रयोः कणयोर्नसोः ॥५८३॥
गण्डयोरोष्ठयोर्दन्तपङ्क्त्योरास्ये च कक्षयोः।
तथा कूर्परयोरस्य तथैव मणिबन्धयोः ॥५८४॥
अङ्गुलीमूलयोश्चैवाथाङ्गुलीनां तथाग्रयोः।
कण्ठे हृदि स्तनद्वन्द्वे पार्श्वयोः पृष्ठके करे ॥५८५॥
जठरे च तथा नाभौ स्वाधिष्ठाने ध्वजे गुदे।
ऊर्वोर्जान्वोस्तथांघ्र्योश्च सर्वाङ्गेऽपि न्यसेत्क्रमात् ॥५८६॥
ध्यानं दशाक्षरप्रोक्तं लक्षमेकं जपेन्मनुम्।
बिल्वप्रसूनैः पत्रैर्वा तिलैस्त्रिमधुना युतैः ॥५८७॥
मधुरत्रययुक्तेन पायसेनाथ वाम्बुजैः।
होमं दशांशतः कुर्यात्तथा सर्वत्र तर्पणम्।
मार्जनं भोजयेद्विप्रान् प्रयोगादि च पूर्ववत् ॥५८८॥

लक्ष्मण द्वारा उपासित राम-मन्त्र—अब मैं लक्ष्मण द्वारा उपासित राम-मन्त्र को कहता हूँ। सैंतालीस अक्षरों का वह मालामन्त्र इस प्रकार है—ॐ नमो भगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्नविशदाय मधुरप्रसन्नवदनाय अमिततेजसे बलाय रामाय विष्णवे नमः। इस मालामन्त्र के ऋषि पितामह (ब्रह्मा), छन्द अनुष्टुप्, देवता राज्याभिषिक्त राम, बीज ॐ एवं शक्ति नमः कहे गये हैं।

मन्त्र के क्रमशः सात, छः, सात, दश, छः एवं ग्यारह वर्णों से इसका षडङ्गन्यास करने के पश्चात् मन्त्र के सैंतालीस वर्णों को शरीर के इन सैंतालीस अंगों में क्रमशः न्यस्त करना चाहिये—शिर, मुख, भ्रूमध्य, दक्ष नेत्र, वाम नेत्र, दक्ष कर्ण, वाम कर्ण, दक्ष नासापुट, वाम नासापुट दक्ष कपोल, वाम कपोल, उर्ध्वोष्ठ, अधरोष्ठ, ऊर्ध्व दन्तपंक्ति, अधो दन्तपंक्ति, ककुद, दक्ष बाहुमूल, वाम बाहुमूल, दक्ष कूर्पर, वाम कूर्पर, दक्ष मणिबन्ध, वाम मणिबन्ध, दक्ष कराङ्गुलिमूल, वाम कराङ्गुलिमूल, दक्ष अङ्गुलि, वाम अङ्गुलि, दक्ष कराङ्गुल्यग्र, वाम कराङ्गुल्यग्र, कण्ठ, हृदय, दक्ष स्तन, वाम स्तन, दक्ष पार्श्व, वाम पार्श्व, पीठ, उदर, नाभि, स्वाधिष्ठान, लिंग, गुदा, दक्ष ऊरु, वाम ऊरु, दक्ष जानु, वाम जानु, दक्ष पाद, वाम पाद एवं सर्वाङ्ग।

इसके बाद पूर्वोक्त दशाक्षर मन्त्र के समान ध्यान करने के उपरान्त मन्त्र का एक लाख की संख्या में जप करना चाहिये। तदनन्तर त्रिमधुराक्त बिल्वपुष्पों, बिल्वपत्रों, तिलों, पायस अथवा कमलों से कृत जप का दशांश (दश हजार) हवन करना चाहिये। तत्पश्चात् तर्पण एवं मार्जन करने के बाद ब्राह्मण-भोजन कराकर पूर्ववत् प्रयोग आदि का सम्पादन करना चाहिये।।५७९-५८८।।

शत्रुघ्नोपासितराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शत्रुघ्नोपासितां पराम्।
जयदां रामगायत्रीं जपितां सूर्यवंशजैः ।।५८९।।
दाशरथाय विद्महे तथा सीतेति वल्लभा।
य धीमहीति तन्नो रा तदग्रे मः प्रचोदयात् ।।५९०।।
एषा स्याद्रामगायत्री भक्तानां भुक्तिमुक्तिदा।
जन्मप्रभृति यत्पापं दशभिर्याति संक्षयम् ।।५९१।।
पुरा कृतं शतेनैव सहस्रेण जपेन वा।
चतुर्लक्षं जपेद्यस्तु मोक्षभाक् स न संशयः ।।५९२।।
यच्च यावच्च पूजादि सर्वं पूर्ववदाचरेत्।
तारादिरेषा गायत्री मुक्तिमेव प्रयच्छति ।।५९३।।
मायादिरपि वै द्रव्यं रमादिश्च श्रियं पराम्।
मन्मथेनापि संयुक्ता सम्मोहयति मेदिनीम् ।।५९४।।

शत्रुघ्न द्वारा उपासित राम-मन्त्र—अब मैं शत्रुघ्न द्वारा उपासित श्रेष्ठ राममन्त्र को कहता हूँ। यह रामगायत्री सूर्यवंशियों द्वारा जप करने पर जय प्रदान करने वाली है। भक्तों को भोग एवं मोक्ष प्रदान करने वाली वह रामगायत्री इस प्रकार है—

दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्। इस रामगायत्री के दश बार जप करने से ही जन्म से लेकर जप-पर्यन्त किये गये पापों का विनाश हो जाता है; साथ ही एक सौ अथवा एक हजार जप से पूर्वजन्म-कृत पाप विनष्ट हो जाते हैं। जो साधक इस मन्त्र का चार लाख जप कर लेता है, वह मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है; इसमें कोई सन्देह नहीं करना चाहिये।

इस रामगायत्री के पूजन आदि समस्त कृत्य पूर्ववत् ही करणीय होते हैं। इस गायत्री के पहले ॐ लगाकर जप करने से निश्चित रूप से मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार आदि में ह्रीं लगाकर जप करने से द्रव्यों की तथा श्रीं लगाकर जप करने से श्रेष्ठ लक्ष्मी की अवश्यमेव प्राप्ति होती है। मन्त्र के पहले क्लीं लगाकर जप करने से साधक साम्पूर्ण पृथिवी को सम्मोहित करने में सक्षम हो जाता है।।५८९-५९४।।

सीतोपासितराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि श्रीसीतोपासितं मनुम्।
श्रीरामाय हुंफट् च स्वाहान्तोऽयं नवाक्षरः ।।५९५।।
अगस्त्योऽस्य मुनिः प्रोक्तः पङ्क्तिश्छन्द उदाहृतम्।
श्रीमद्दाशरथी रामो देवता परिकीर्तितः ।।५९६।।
स्वाहा शक्तिश्च रां बीजं बीजेनैव षडङ्गकम्।
सबिन्दुभिर्यकाराद्यैः पञ्चाङ्गन्यास ईरितः ।।५९७।।
नीलोत्पलदलश्यामं जटामुकुटमण्डितम्।
पीताम्बरधरं देवं चापबाणविभूषितम् ।।५९८।।
दक्षिणे लक्ष्मणं ध्यायेत्कनकाभं किरीटिनम्।
वामभागे जगद्योनिं प्रकृतिं परमेश्वरीम् ।।५९९।।
सीतां चम्पकगौराङ्गीं श्वेतवस्त्रविभूषिताम्।
सर्वाभरणसंयुक्तां द्विभुजां रत्नकुण्डलाम्।
धनुर्बाणकरं देवं सीतां पद्मकरां स्मरेत् ।।६००।।
यद्वा रामं चतुर्बाहुं शङ्खचक्रासिशार्ङ्गिणम्।
सीतालक्ष्मणसंयुक्तं ध्यायेत्कल्पतरोरधः ।।६०१।।
ध्यात्वैवं हृदये राममन्तरा वा बहिर्यजेत्।
षट्कोणमध्ये रामं च कोणेष्वङ्गानि चार्चयेत् ।।६०२।।
तद्बाह्येऽष्टदले पूर्वदिगादौ भरतं यजेत्।
हनूमन्तं लक्ष्मणं च जाम्बवन्तं क्रमेण च ।।६०३।।

सुग्रीवमर्चयेत् पश्चात्पूजयेच्च विभीषणम्।
सीतां च सुग्रीवाग्रे तु दिक्पालान् हेतिभिः सह ॥६०४॥
जपेद् द्वादशलक्षाणि होमश्चाशोकपुष्पकैः।
तर्पणादि ततः कृत्वा प्रयोगार्हो भवेन्मनुः ॥६०५॥

सीता द्वारा उपासित राम-मन्त्र—अब मैं सीता द्वारा उपासित राम-मन्त्र को कहता हूँ। यह नवाक्षर मन्त्र इस प्रकार कहा गया है—रां श्रीरामाय हुं फट् स्वाहा। इस मन्त्र के ऋषि अगस्त्य, छन्द पंक्ति, देवता दाशरथी राम, शक्ति स्वाहा एवं बीज रां कहा गया है। बीजमन्त्र के ही छः दीर्घ स्वरूपों (रां रीं रूं रैं रौं रः) से इसका षडङ्गन्यास किया जाता है। बिन्दुयुक्त यकारादि (य फट् स्वाहा) से इसका पञ्चाङ्गन्यास कहा गया है।

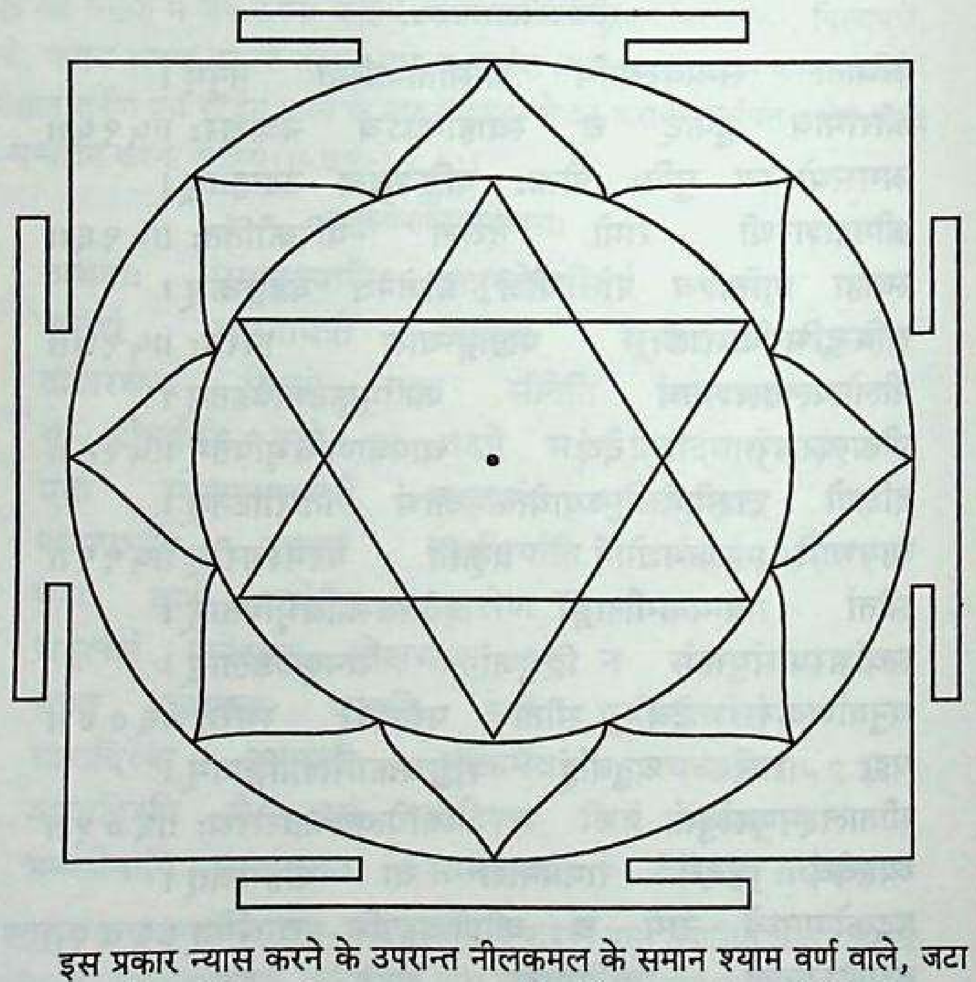

इस प्रकार न्यास करने के उपरान्त नीलकमल के समान श्याम वर्ण वाले, जटा एवं मुकुट से सुशोभित, पीत वस्त्र धारण करने वाले, चाप एवं बाण से विभूषित राम

का; उनके दाहिनी ओर किरीट धारण किये हुये स्वर्णवर्ण वाले लक्ष्मण एवं बाँयीं ओर चम्पक-सदृश गौर वर्ण वाली श्वेत वस्त्रों से विभूषित समस्त आभरणों से भूषित रत्न-निर्मित कुण्डल धारण की हुई दो भुजाओं में कमल धारण की हुई जगद्योनि-स्वरूपा प्रकृति-स्वरूपिणी परमेश्वरी सीता का स्मरण करना चाहिये। अथवा चार भुजाओं वाले, हाथों में शंख. चक्र तलवार एवं धनुष धारण किये हुये, सीता एवं लक्ष्मण के सहित कल्पवृक्ष के नीचे विराजमान राम का स्मरण करना चाहिये। इस प्रकार अपने हृदय में ध्यान करके अन्तस्तल में अथवा बाहर यन्त्र में राम का पूजन करना चाहिये।

षट्कोण-मध्य में राम का पूजन करके षट्कोणों में षडङ्गों का पूजन करने के उपरान्त राम के वाम भाग में सीता का पूजन करना चाहिये। उसके बाहर अष्टदल में पूर्व दिशा से प्रारम्भ करके चारो दिशाओं में क्रमश: भरत, हनुमान, लक्ष्मण एवं जाम्बवन्त का पूजन करने के बाद विदिशाओं में क्रमश: सुग्रीव, विभीषण एवं सीता का पूजन करने के पश्चात् भूपुर में आयुधों के सहित इन्द्रादि दश दिक्पालों का पूजन करना चाहिये।

उक्त प्रकार से पूजन करने के उपरान्त मन्त्र का बारह लाख जप करने के पश्चात् अशोकपुष्पों से हवन करके तर्पण-मार्जन करने पर मन्त्र प्रयोग करने के योग्य हो जाता है।।५९५-६०५।।

रक्तापामार्गपत्रैश्च मधुरत्रयसंयुतैः ।
वा कञ्जपत्रैर्जुहुयाद्धोमोऽयं लोकवश्यकृत् ।।६०६।।
जपापुष्पहुतं भस्म तिलकं लोकवश्यकृत् ।
मल्लिकाभिर्जगद्वश्यं भवत्येव न संशयः ।।६०७।।
लक्षत्रयं जपेन्मन्त्री सर्वज्ञानमवाप्नुयात् ।
अश्रुतान्यपि शास्त्राणि षड्भिर्लक्षैस्तु विन्दति ।
नवभिर्देवकन्याभिर्देववत्स प्रमोदते ।।६०८।।
चन्द्रसूर्योपरागे तु मोक्षौषद्ध्यभिमन्त्रितम् ।
कपिलाज्यं पिबेद्यस्तु दूर्वारसविमिश्रितम् ।।६०९।।
अद्याज्ज्योतिष्मतीतैलमङ्कोलरसमिश्रितम् ।
शुद्धब्राह्मीरसं वापि स सर्वज्ञो भवेद् द्रुतम् ।।६१०।।
सन्ध्यात्रये प्रतिदिनं सहस्त्रत्रितयं जपेत् ।
मासेन महदैश्वर्यं जायते नात्र संशयः ।।६११।।
श्रीकामो जुहुयात्पद्मैरयुतं त्रिमधुप्लुतैः ।
धनवाञ्जायते मन्त्री द्वितीय इव यक्षराट् ।।६१२।।

बिल्वपत्रैश्च जुहुयादथवा तद्दलैर्हुनेत्।
लक्षमेकं निधिस्थाने निधिलाभो भवेद् ध्रुवम् ॥६१३॥

लोकवशीकरण के लिये मधुरत्रय से समन्वित लाल अपामार्ग के पत्तों से अथवा कमल के पत्तों से हवन करना चाहिये। जपापुष्पों के हवन के भस्म का तिलक लगाने से लोकवशीकरण होता है। मल्लिकापुष्पों के हवन से निश्चित रूप से जगत् का वशीकरण होता है।

मन्त्र का तीन लाख जप करने से मन्त्रज्ञ साधक समस्त ज्ञानों को प्राप्त कर लेता है। छः लाख जप करने वाला साधक न सुने हुये शास्त्रों को भी जान लेता है। नव लाख जप करने वाला साधक देवकन्याओं के साथ देवता के समान प्रमुदित होता है।

चन्द्र अथवा सूर्यग्रहण में मोक्षौषधि को अभिमन्त्रित करके दूर्वारस से विमिश्रित कपिला गाय के घृत का जो पान करता है, अथवा उस अभिमन्त्रित औषधि में अंकोल-रसमिश्रित ज्योतिष्मती का तेल अथवा शुद्ध ब्राह्मीरस का जो पान करता है, वह शीघ्र ही सर्वज्ञ हो जाता है। एक मास-पर्यन्त प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में तीन हजार मन्त्रजप करने से निश्चित रूप से महान् ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

मधुरत्रय-समन्वित एक हजार कमलों से दश हजार हवन करने वाला लक्ष्मी-प्राप्ति का इच्छुक मन्त्रज्ञ साधक धनवान होकर दूसरे कुबेर के समान हो जाता है। खजाने के स्थान पर बिल्वपत्रों अथवा बिल्वदलों से एक लाख हवन करने पर निश्चित रूप से खजाने का लाभ होता है।।६०६-६१३।।

शिवोपासितराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि मयैवोपासितं सुराः।
ज्ञानप्रदं महामन्त्रं सनकाद्यैरुपासितम् ॥६१४॥
ॐ नमो ब्रह्मदेवाय रामायाकुण्ठमेधसे।
उत्तमश्लोकवर्याय न्यस्तदण्डार्चिताङ्घ्रये ॥६१५॥
शुकदेवो मुनिश्चास्य छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतम्।
श्रीरामो देवता बीजं रां वर्य्यः शक्तिरुच्यते ॥६१६॥
चतुष्पादैः समस्तेन पञ्चाङ्गविधिरीरितः।
प्राग्वद्ध्यानादिकं लक्षं पुरश्चर्या प्रकीर्तिता ॥६१७॥
आज्यपायसहोमं च ब्राह्मणार्चां समाचरेत्।
प्रयोगाः पूर्वमन्त्रोक्ता मोक्षार्थी साधयेदमुम् ॥६१८॥

शिवोपासित राम-मन्त्र—हे देवताओं! अब मैं स्वयं द्वारा उपासित राम-मन्त्र

को कहता हूँ। सनकादि महर्षियों द्वारा उपासित यह महामन्त्र ज्ञान प्रदान करने वाला है। बत्तीस अक्षरों का वह मन्त्र है—ॐ नमो ब्रह्मदेवाय रामायाकुण्ठमेधसे उत्तमश्लोकवर्याय न्यस्तदण्डार्चितांघ्रये। इस मन्त्र के ऋषि शुकदेव, छन्द अनुष्टुप्, देवता श्रीराम, वीज रां एवं वर्य्यः शक्ति कहे गये हैं। इसके पञ्चाङ्गन्यास में मन्त्र के चार पादों से हृदय, शिर, शिखा एवं कवचन्यास करने के उपरान्त सम्पूर्ण मन्त्र से अस्त्रन्यास किया जाता है। इसके ध्यान आदि पूर्ववत् होते हैं तथा मन्त्र के एक लाख जप से इसका पुरश्चरण होता है। गोघृत-मिश्रित पायस से हवन करके तर्पणादि के बाद ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिये। पूर्वमन्त्रोक्त प्रयोग इस मन्त्र से भी किये जाते हैं। मोक्षकामी को इस मन्त्र का साधन करना चाहिये।।६१४-६१८।।

शक्रोपासितराममन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शक्रेणोपासितं मनुम्।
येन कारागृहान्मुक्तो रावणस्य सुरेश्वरः ॥६१९॥
तारो नमो भगवते रामभद्राय संवदेत्।
बन्दीविमुक्तश्रृङ्खले स्वाहा द्वाविंशदक्षरः ॥६२०॥
विभीषणो मुनिः प्रोक्तो जगती छन्द ईरितम्।
स्वाहा शक्तिर्ध्रुवो बीजं रामभद्रोऽस्य देवता।
पदैरस्य षडङ्गानि जपेल्लक्षमितं सदा ॥६२१॥
प्राग्वद्धोमादिकं सर्वं यदर्थं जप्यतेऽयुतम्।
सप्ताहाज्जायते मोक्षो नात्र कार्या विचारणा ॥६२२॥

इन्द्र द्वारा उपासित राम-मन्त्र—अब मैं इन्द्र के द्वारा उपासित राम-मन्त्र को कहता हूँ, जिसके प्रभाव से देवराज इन्द्र रावण के कारागार से मुक्त हुये थे। बाईस अक्षरों का वह मन्त्र है—ॐ नमो भगवते रामभद्राय बन्दीविमुक्तश्रृङ्खले स्वाहा। इस मन्त्र के ऋषि विभीषण एवं छन्द जगती कहे गये हैं। शक्ति स्वाहा, बीज ॐ एवं इस मन्त्र के देवता रामभद्र हैं। इसके छः पदों से षडङ्गन्यास किया जाता है। पुरश्चरण-सिद्धि के लिये इसका एक लाख जप करना चाहिये। इसके हवन आदि समस्त कृत्य पूर्ववत् होते हैं। जिसके लिये इस मन्त्र का दश हजार जप किया जाता है, वह सात दिनों में निश्चित ही मुक्त हो जाता है; इसमें कोई सन्देह नहीं करना चाहिये।।६१९-६२२।।

सीतामन्त्रः

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सीतामन्त्रं महाद्भुतम्।
श्रीसीतायै नमः स्वाहा सीतामन्त्रः षडक्षरः ॥६२३॥

जनकोऽस्य मुनिश्छन्दो गायत्रं देवता मता।
सीता भगवती प्रोक्ता श्रीं बीजं शक्तिरन्यकौ।
दीर्घस्वरयुताद्येन षडङ्गानि प्रकल्पयेत् ॥६२४॥
पूजयेद्वैष्णवे पीठे ध्यायेद्राघवसंयुताम्।
स्वर्णाभामम्बुजकरां रामालोकनतत्पराम् ॥६२५॥
वर्णलक्षं जपेन्मन्त्रमिष्टार्थं साधयेत्ततः।
आरोग्याय घृतं धान्यं ताम्बूलं वश्यसिद्धये।
श्रीफलानि तिलान्मुक्त्यै भुक्त्यै च जुहुयात्सदा ॥६२६॥

सीता-मन्त्र—अब मैं अत्यन्त अद्भुत सीता-मन्त्र को कहता हूँ। षडक्षर सीतामन्त्र है—श्रीसीतायै नमः अथवा श्रीसीतायै स्वाहा। इस मन्त्र के ऋषि जनक, छन्द गायत्री, देवता भगवती सीता, बीज श्रीं एवं शक्ति स्वाहा है। दीर्घ स्वर-युक्त श्री से इसका षडङ्गन्यास किया जाता है। वैष्णवपीठ पर इसका पूजन किया जाता है। स्वर्णवर्ण वाली, हाथों में कमल धारण की हुई, श्रीराम को निर्निमेष दृष्टि से देखती हुई राघव से समन्वित सीता का ध्यान करके मन्त्र का वर्णलक्ष अर्थात् छः लाख जप करने के पश्चात् अपना अभीष्ट-साधन करना चाहिये। आरोग्य-प्राप्ति के लिये घृतमिश्रित धान्य से, वशीकरण-सिद्धि के लिये ताम्बूल से, भोग-प्राप्ति के लिये श्रीफल से एवं मुक्ति-प्राप्ति के लिये सदा तिलों से हवन करना चाहिये।।६२३-६२६।।